Computer Software

Software :- कम्प्यूटर सिस्टम के वे पार्ट (भाग) जिन्हे हम ना छू सकते है और ना ही देख सकते है। केवल उन पर कार्य कर सकते है। उन्हे सॉफ्टवेयर कहते है। कम्प्यूटर सिस्टम मे 2 प्रकार के सॉफ्टवेयर होते है। (1) System Software (2) Application Software

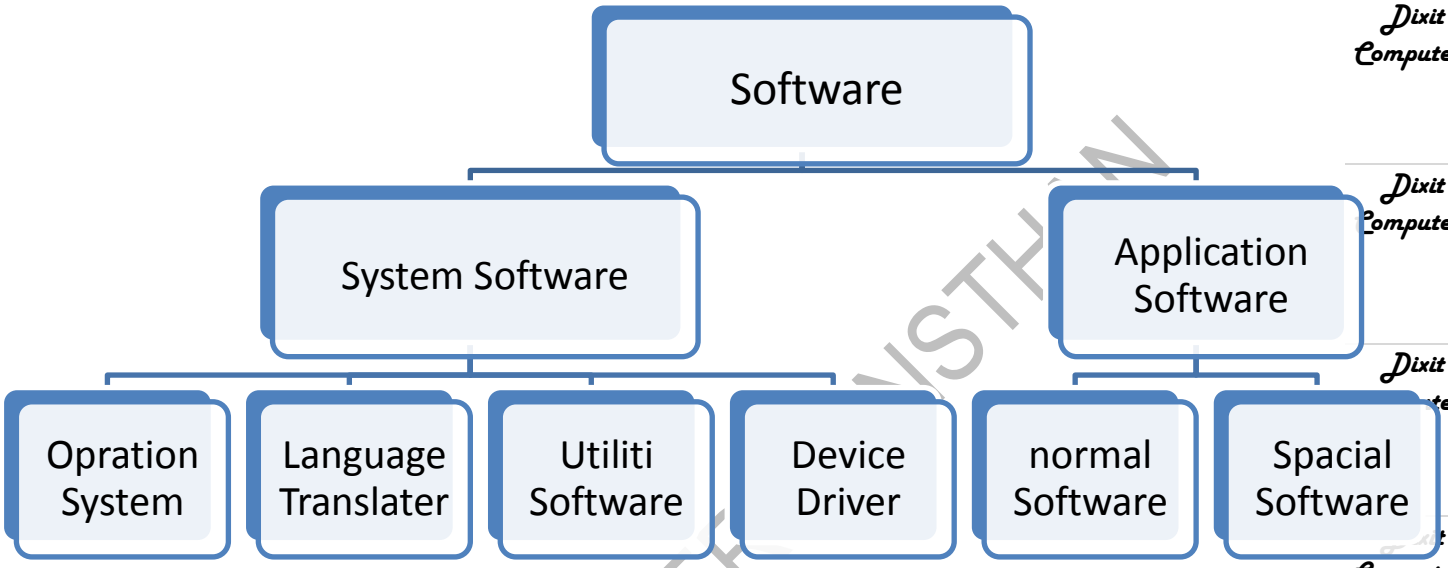

System Software :- वे सॉफ्टवेयर जो सिस्टम के लिए आवश्यक है, सिस्टम की आवश्यकता को पूरा करते है सिस्टम सॉफ्टवेयर कहलाते है। सिस्टम सॉफ्टवेयर सिंगल प्रोग्राम नही होता बल्की प्रोग्रामो को समूह होता है। इसके अन्तगर्त 4 प्रोग्राम होते है जो सिस्टम की आवश्यकता को पूरी करते है। वे निम्न है।

नोट :– सिस्टम सॉफ्टवेयर को बैकग्राउण्ड सॉफ्टवेयर के नाम से जाना जाता है।

Oprating System :- वे सॉफ्टवेयर जो पूरे सिस्टम को ओपरेट करते है। अर्थात सिस्टम को चलाते है। ओपरेटींग सिस्टम कहलाते है। आपेरेटिंग सिस्टम के निम्न कार्य होते है।

(i) **File Menegment**

(ii) **Memory Menegment**

(iii) **Process Menegment**

DIXIT COMPUTER SANSTHAN

Disk operating system (DOS)

Disk operating system (Dos) personal computer पर सार्वधिक प्रयुक्त होने वाला Operating system है इसको Microsoft company द्वारा 1981 में IBM Computer के लिए बनाया गया था अतः इसे Microsoft Dos भी कहते है इसके बाद Microsoft Company ने 1981में Microsoft Dos का पहला संस्करण (Version) 1.0 Launch किया गया। फिर 1983 में DOS 2.0, 1984 में 3.0 तथा उससे बाद 4.0,5.0,6.0 तथा 6.22 version जो सबसे अधिक उपयोग में लिया जा रहा है चुंकि Dos को Pc पर प्रयोग के लिए बनाया गया हैं। इसलिए इसे PC DOS भी कहते हैं अतः यह Single User Operating System थी यह एक समय में केवल एक ही User के आदेशो का पालन कर सकता है

जब हम Computer को Start करते हैं तब DOS किसी Disk पर होना चाहिए। यहां Disk Floppy या Hard Disk कुछ भी हो सकती है इससे बिना Computer Boot करते हैं तो Hardware में स्थित एक Program (Bootstrap Loader) DOS एक Disk की Primary Memory में Load कर देता हैं। इसे ही Computer की Booting कहते है

Computer की Booting Process :- Computer के Start करने से लेकर Monitor पर DOS prompt आने तक की प्रक्रिया को Booting Process कहते है

Language Translator:- कम्प्यूटर केवल मशीन भाषा समझता है जो केवल 0 ओर 1 होती है। जिन्हे बाइनरी डिजिट कहॉ जाता है। अपनी भाषा को कम्प्यूटर को समझने योग्य बनाने के लिए ट्रांसलेटर की आवश्यकता होती है। जो अपनी भाषा को मशीन भाषा मे और मशीन भाषा की अपनी भाषा मे ट्रांसलेटर करने का काम करते हैं। तीन प्रमुख ट्रांसलेटर है। जो निम्न है।

(i) Assembler (ii) Interpranter (iii) Compiler

Utility Software:- यूटीलीटी सॉफ्टवेयर को सर्विस प्रोग्राम के नाम से भी जाना जाता है। युटीलिटी सॉफ्टवेयर निम्न कार्य करते है।

(i) Disk cleanup (ii) File dissfrinmenter (iii) Antivirus

DIXIT COMPUTER SANSTHAN

Device Driver:- कम्प्यूटर मे बाहर से लगाई जाने वाली इनपूट डिवाइस और आउटपूट डिवाइस की जॉच करता है। की वे डिवाइस सही तरिके से काम कर रही है या नही ।

Application Software :- वे सॉफ्टवेयर जो यूजर की आवश्यकता को पूरी करते है। जो यूज़र के लिए बनाए जाते हैं उसे एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर कहॉ जाता है। यह भी दो प्रकार के होते है।

ऐसे सॉफ्टवेयर को किसी उद्देश्य के लिए बनाए जाते हैं उन्हे स्पेशल सॉफ्टवेयर कहॉ जाता है। जैसे अकाल पिडित व्यक्तियो के सर्वे लिए बनाया गया तथा बी.पी.एल. परिवारो के सर्वे के लिए बनाया गया सॉफ्टवेयर स्पेशल सॉफ्टवेयर कहलाता है।

ऐसे सॉफ्टवेयर जो किसी उद्देश्य के लिए नही बनाये जाते हैं नोरमल सॉफ्टवेयर कहलाते है।

नोट :– ऐसे सॉफ्टवेयर जो एक से अधिक कार्य करते है। उन्हे पैकेज सॉफ्टवेयर कहते है। जैसे एम एस वर्ड

नोट :– युजर के बारे मे लिखि गई सूचना कुकीज फाईल कहलाती है।

DIXIT COMPUTER SANSTHAN